(छन्द)

जिस रचना में मात्राओं एवं वर्णों की विशेष व्यवस्था होती है, संगीतात्मकता लयात्मकता होती है छन्द कहलाती है।

मात्रा :-

उच्चारण काल में लगने वाला समय को मात्रा कहते हैं।

दो प्रकार

- लघु (ह्रस्व)
  - चिह्न — ।
  - अ इ उ ऋ, ँ
- गुरु (दीर्घ)
  - चिह्न ऽ
  - आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः
  - → संयुक्त व्यंजन से पूर्व का वर्ण
  - → या उच्चारण के आधार पर।

यति :- (विराम)

छन्द की लय के प्रवाह में आने वाले विराम को यति कहते हैं।

पाद/चरण :-

प्रायः चार पंक्तियाँ छन्द में होती हैं, इन्ही में से एक पंक्ति को चरण या पाद कहते हैं।

सम चरण — दूसरा व चौथा।

विषम चरण — पहला व तीसरा।

छन्द के प्रकार

↓

(3)

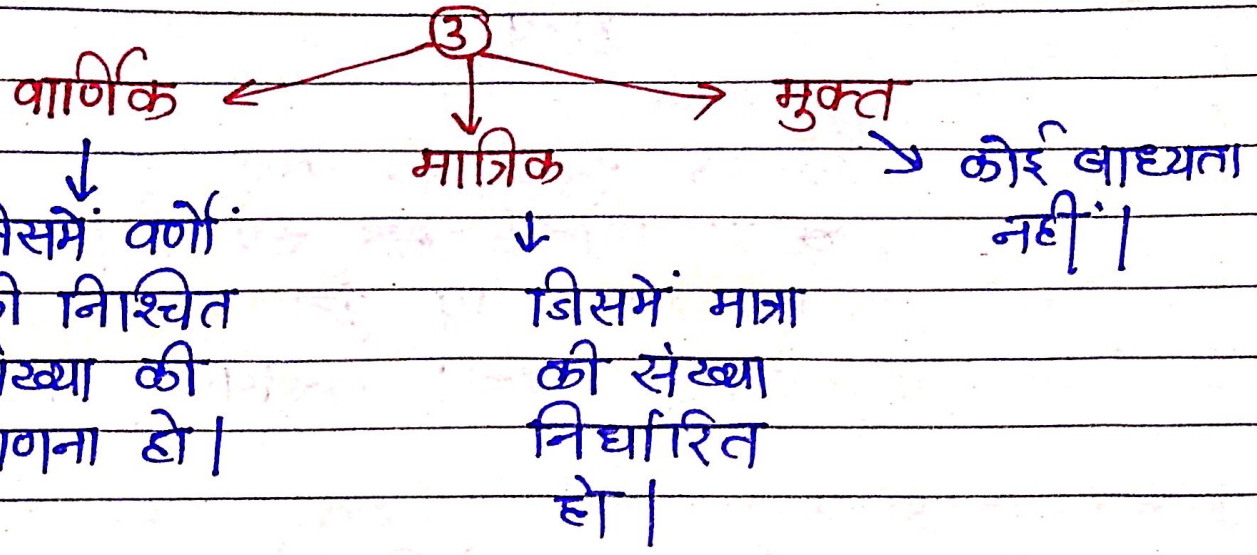

- वार्णिक → जिसमें वर्णों की निश्चित संख्या की गणना हो।
- मात्रिक → जिसमें मात्रा की संख्या निर्धारित हो।
- मुक्त → कोई बाध्यता नहीं।

"सोरठा"

लक्षण :—

यह दोहे का उल्टा होता है। इसके प्रथम और तृतीय चरण में ग्यारह-२ मात्राएँ एवं द्वितीय व चतुर्थ चरण में तेरह-तेरह मात्राएं होती हैं।

उदाहरण —

"कुंद इन्दु सम देह,
उमा रमन करुना अयन।
जाहि दीन पर नेह,
करहु कृपा मर्दन मयन॥"

(11) → S | | | | | | | S |
अन्य — जो सुमिरत सिधि होइ

(13) → | | S | | | | | | | | |
गन नायक करिवर बदन।

(11) → | | | | S | | S |
करहु अनुग्रह सोइ,

(13) → S | S | | | | | | | |
बुद्धि रासि, सुभ गुन सदन॥"

अन्य

"बन्दउ गुरु पद कंज
कृपा सिन्धु नर रूप हरि।
महा मोह तम पुंज
जासु वचन रविकर निकर॥"

लिखकर लोहित लेख,
डूब गया दिन मणि अस्त।
व्योम सिन्धु साखि देख,
तारक बुदबुद दे रहा॥

बंदउ मुनि पद कंज
रामायन जेहिं निरमयउ।
सरस सुकोमल मंजु
दोष रहित दूषन सहित॥

रोला

लक्षण -

यह एक सममात्रिक छन्द है।
इसमें चार चरण होते हैं, प्रत्येक चरण में
24-24 मात्राएँ होती हैं। 11 और 13
मात्राओं पर यति होती है।

उदाहरण :- ।। ऽ ।। ऽऽ।, ऽ। ।। ।।।।ऽ।।
कोउ पापिह पंचत्व प्राप्त सुनि जमगन धावत।
बनि-बनि बावन बीर बढ़त चौचंद मचावत।
पै तकि ताकी लोथ त्रिपथगा के तट लावत।
नौ द्वै ग्यारह होत तीन पाँचहि बिसरावत॥

अन्य :-

स्वाति घटा घहराति मुक्ति पानिप सों पूरी।
कैधों आवति झुकति सुभ्र आभा रुचि रूरी॥
मीन मकर जलव्यालनि की चल चिलक सुहाई।
सो जनु चपला चमचमाति चंचल छवि छाई॥
ऽ ।। ।।ऽ ।।।,ऽ। ऽ।। ।। ऽऽ